ध्यान मंत्र

रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः। चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः।।

मंगल का गायत्री मंत्र

ऊँ अंगारकाय विद्महे

लोहितांगाय धीमहि।

तन्नोः भौमः प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र

ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ हृं श्रीं भौमाय नमः।

ऊँ हूं श्रीं मंगलाय नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ अं अंगारकाय नमः।

श्री गोकुलेश शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं एक या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से प्रातःकाल में करना चाहिये।

मंगल ग्रह का रत्न

मूंगा (Coral) मंगल ग्रह का रत्न है, और मंगल ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। शुद्ध मूंगा रत्न धारण करने के परिणाम तीन वर्ष तक प्राप्त होते हैं। शुद्ध मूंगा रत्न के अभाव में मंगल ग्रह के उपरत्नों का भी प्रयोग किया जा सकता है जैसेः- संगमूंगी, विद्रुम मणि, लाल ओनेक्स या हकीक आदि।

मूंगा रत्न की सामान्य पहचान

मूंगा रत्न देखने में सिन्दूरी (लाल), चमकदार होता है। हाथ में लेने पर चिकना और हल्का होता है।

मूंगा रत्न की सामान्य परीक्षण विधियां

मूंगे रत्न के ऊपर पानी की बूंद रखने पर पानी की बूंद बनी रहती है, बिखरती नही है। समुद्री लकड़ी होने के कारण रेती से रगड़ने पर लकड़ी की ही तरह आवाज आती है, कडकड़ाहट (कांच) की आवाज नही आती, आजकल प्लास्टिक के नकली मूंगे भी पहचान में नही आते, यदि इनको लोहे की गरम तार से छू लें तो ये प्लास्टिक की तरह जल जातें हैं।

मूंगा रत्न धारण करने की विधि

मूंगा रत्न को सोने, चांदी या तांबे की अंगूठी या लॉकेट में बनवाकर, उसकी प्राणप्रतिष्ठा करके या करवाकर, किसी शुभ मुहूर्त में या शुक्ल पक्ष के मंगलवार या मंगल की होरा में या मंगल ग्रह के नक्षत्र वाले दिन सूर्योदय के बाद और सुबह ग्यारह बजे के बीच अनामिका अंगुली (ring finger) में धारण करना चाहिये।

मूंगा रत्न धारण करने के लाभ

जन्म पत्रिका में मंगल ग्रह के स्वामित्व भाव, मंगल ग्रह के स्थित भाव, मंगल ग्रह की दृष्टि और मंगल ग्रह की दशा आदि में मंगल ग्रह के शुभ प्रभावों को बढ़ानें और अशुभ प्रभावों को कम करने में मूंगा रत्न सहायक होता है, साथ ही भूमि और मातृ संबंधित सुख और लाभ, रक्त विकार, अस्थि और मज्जा रोगों से बचाव और निर्णय लेने की क्षमता, पराक्रम और साहस को बढ़ानें में भी सहायक सिद्ध होता है।

मूंगा रत्न धारण करने के लिए निर्देश और सावधानियां

मूंगा रत्न के पूर्ण शुभ फल प्राप्त करने के लिए अंगूठी या लॉकेट का निचला भाग भी खुला होना चाहिए ताकि मूंगा रत्न आपके शरीर को छू सके। मूंगा रत्न धारण करने के बाद यदि संभव हो सके तो तामसिक भोजन का प्रयोग न करें, नही तो कम से कम मंगलवार के दिन तामसिक भोजन का प्रयोग बिलकुल न करें, धैर्य रखें, क्रोध न करें, झूठ न बोलें और मंगलवार के दिन यथा शक्ति मंगल ग्रह का मंत्र जप करें। मूंगा रत्न स्त्रियों के लिए बांए हाथ की अनामिका अंगुली (ring finger) में धारण करने का विधान है। **मूंगा रत्न धारण करनें के बाद 27 दिन के अन्दर यदि आपको प्रतिकूलता का अनुभव हो तो तुरंत ज्योतिषीय सलाह लें।**

बुध ग्रह की पौराणिक कथा

पुराणों में बुध के जन्म और विवाह की बड़ी विचित्र कथाएं मिलती हैं। चन्द्रमा जो मन का कारक ग्रह है, जिसने अनन्त दिशाओं से शक्ति प्राप्त करके अपनी चंचलता को बढ़ाया है, इसी कारण चन्द्रमा ने एक कुकृत्य कर डाला, वह गुरू पत्नी तारा पर आसक्त हो गया और उसे बल पूर्वक उठा कर अपने साथ ले गया और कई महीनों तक अपने साथ रखा। सभी देवी देवताओं ने इस कुकृत्य की घोर निंदा की और तारा को वापस देने के लिए दबाव बनाया, पर चन्द्रमा नही माना। सभी देवी देवताओं ने एक साथ मिलकर चन्द्रमा से युद्ध करने की घोषणा की, तो चन्द्रमा भी दैत्यों के गुरू शुक्राचार्य की शरण में चला गया। एक विशाल युद्ध की तैयारी के बाद जब ब्रह्मा जी ने बीच में हस्तक्षेप किया तो चन्द्रमा ने तारा को वापस लौटा तो दिया पर वह उस समय गर्भवती थी। बृहस्पति ने तारा को उस गर्भ को त्यागने के लिए कहा और तारा ने उस गर्भस्थ शिशु को तृणों के ढ़ेर पर गिरा दिया, जिसे बाद मे चन्द्रमा ने उठा लिया और अपनी पत्नी रोहिणी को पालन पोषण के लिए दे दिया। इस तरह बुध का जन्म हुआ। बुध के पिता हुए चन्द्रमा और माता का नाम हुआ तारा। बालक में गंभीरता, शास्त्रों मे पारंगता, बुद्धिमता, चातुर्य और वाक्पटुता आदि गुणों को देखकर ब्रह्मा जी ने ही उसका नाम बुध रखा था। इन्हीं गुणों को देखकर वैवस्वत मनु ने अपनी कन्या इला का विवाह संस्कार बुध के साथ कर दिया, जिससे बुध और इला ने एक पुत्र रत्न पुरूर्वा को जन्म दिया, जो बड़े प्रतापी राजा हुए। बुध और इला के मिलन की एक अन्य मनोरंजक कथा और भी मिलती है। इला प्रजापति कर्दम ऋषि के पुत्र थे, एक बार इला आखेट (शिकार) खेलते-खेलते अंजाने में अपने सैनिकों सहित एक ऐसे क्षेत्र में प्रवेश कर गये, जहां भगवान शंकर और माता पार्वती आनन्द मना रहे थे। उस समय वह सारा रमण क्षेत्र स्त्री लिंग में परिवर्तित हो गया था, जिसमें सभी प्राणियों सहित वृक्ष,

जड़, चेतन आदि सभी को भगवान शंकर ने स्त्री रूप में परिवर्तित कर दिया और स्वयं भी स्त्री रूप हो गए, उस समय इला भी अपने सभी सैनिकों सहित एक सुन्दर स्त्री के रूप में बदल गया। इला ने जब अपने आप को स्त्री रूप में पाया तो बहुत दुःखी हुआ और अपनी अनजाने में हो गई भूल के लिए महादेव से क्षमा याचना करने लगा, उसकी क्षमा याचना का असर महादेव पर कुछ न पड़ा, पर माता पार्वती को इला की ऐसी अवस्था देखकर उस पर दया आ गई, पार्वती जी ने इला को आशीर्वाद दिया की वह बारह महीनों में केवल एक महीने के लिए अपने असली पुरूष रूप में आ सकता है पर शेष ग्यारह महीने इसी मनोहर स्त्री रूप में ही रहना होगा और कहा कि जब वह स्त्री रूप में होगा तो पुरूष रूप की एक भी बात उसे याद नही रहेगी और जब वह पुरूष रूप में होगा तब स्त्री रूप की एक भी बात उसे याद नही रहेगी (कई अन्य कथाओं में छः महीने पुरूष और छः महीने स्त्री बताया गया है)। इतना कहकर माता पार्वती और महादेव अन्तरध्यान हो गए। इसी मनोहर स्त्री रूपी इला को जब चन्द्र पुत्र बुध ने देखा तो उस पर मोहित हो गए और उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार (अंगीकार) कर लिया। गर्भधान के नौ महीनों के बाद पुत्र रत्न के रूप में पुरूर्वा का जन्म हुआ जिसने चन्द्रवंश को आगे बढ़ाया, दूसरी ओर प्रजापति कर्दम ऋषि ने अपने पुत्र को सदा के लिए नारी शरीर से मुक्ति दिलाने के लिए भगवान महादेव को प्रसन्न करने के लिए अश्वमेघ यज्ञ किया और अपने पुत्र इला को सदा के लिए पुरूष रहने का आशीर्वाद प्राप्त कर लिया।

बुध ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

कुशाग्र बुद्धि होने के कारण ब्रह्मा जी ने बुध नाम रखा, इसलिए बुध बुद्धि का कारक ग्रह भी माना जाता है। ज्योतिष शास्त्र में बृहस्पति का शुक्र को शत्रु मानने का एक कारण यह भी है कि शुक्राचार्य ने युद्ध के दौरान चन्द्रमा को अपनी शरण में ले लिया था। बुध जब बड़े हुए और उन्हें अपने जन्म के विषय में चन्द्रमा के कुकृत्य के बारे में पता चला तो बुध शर्म और ग्लानि से पीड़ित रहने लगे। इसी लिए बुध सभी ग्रहों को छोड़कर केवल एकमात्र चन्द्रमा से शत्रुता रखते हैं।

बुध का सामान्यः स्वभाव शुभ है, परंतु जिन ग्रहों के साथ बैठता है या जिन ग्रहों की दृष्टि में होता है उनसे प्रभावित होकर वैसा ही फल देता है। बुध एक दिन में लगभग 64 मिनट (angle वाले मिनट) से लेकर 99 मिनट (angle वाले मिनट) चलता है। एक राशि में 27 या 30 दिन तक रहता है। बुध व्यक्ति की वाक् शक्ति को प्रभावित करता है। बुध आपकी बुद्धि और वाणी के बीच तालमेल बैठाने का कार्य करता है। यदि बुध कुण्डली में जातक के लिए शुभ है, तो जातक जीवन में आगे बढ़ता जाता है, पर यदि अशुभ है तो पीछे, मैने अनेकों कुण्डलियों में देखा है कि बुध के अशुभ और पीड़ित होने के कारण व्यक्ति अपनी बात को ठीक से व्यक्त नही कर पाता या कोशिश करने पर गलत व्यक्त कर देता है और जीवन में आगे नही बढ़ पाता, यदि बुध शुभ और बलशाली हों तो अपने मतलब की बातें करके आसानी से अपना काम निकलवा लेते हैं। आजकल तो बिना बोले काम ही नही चलता, इसलिए बुध को जन्म कुण्डली में अति आवश्यक है कि बलशाली होना चाहिए नही तो बलशाली बनाया जाए। बुध यदि बलशाली है तो जिन (कुछ विशेष तत्व) का प्रतिनिधित्व बुध करता है, उन तत्वों का लाभ हम जीवन भर उठा सकते हैं।

बुध ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैं:-

1	कारक	वाणी
2	संबंध	बंधु/ मित्र
3	स्वभाव	मिश्रित (अनेकों) (अधिकांश शांत/सौम्य)

4	गोत्र	जातमत्रि
5	दिन	बुधवार
6	वाहन	बाघ (सिंह)
7	रंग	हरा
8	दिशा	उत्तर
9	गुण (प्रकृति)	रजोगुणी
10	लिंग	नपुंसक (पुरूष)
11	वर्ण (जाति)	वैश्य/शूद्र
12	तत्व	पृथ्वी/वायु
13	स्वाद	मिश्रित (अनेकों)
14	धातु	कांस्य, पीतल
15	ऋतु	पतझड़/शरद्
16	दृष्टि विशेष	7 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	मूंग की दाल
18	शारीरिक अंग	त्वचा, मुख
19	अन्न दान	हरी मूंग (साबुत)
20	द्रव्य दान	घी
21	विंशोत्तरी महादशा	17 वर्ष
22	जप संख्या	9,000
23	रत्न	पन्ना, (संस्कृत में मर्कतमणि)
24	उपरत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज
25	सहचरी	इला
26	चरादि	द्विस्वभाव
27	समिधा	अपामार्ग (चिचिड़ा)
28	बुध के मित्र ग्रह	सूर्य, शुक्र
29	बुध के सम ग्रह	मंगल, शनि, बृहस्पति, राहु, केतु
30	बुध के शत्रु ग्रह	चन्द्रमा
31	उच्च राशि	कन्या (0° से 15° तक)
32	नीच राशि	मीन (0° से 15° तक)

33	मूल त्रिकोण राशि	कन्या (15° से 20° तक)
34	स्वग्रही राशि	कन्या (21° से 30° तक)
35	राशि स्वामी	मिथुन, कन्या
36	नक्षत्र स्वामी	अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
37	बुध के आधी देवता	विष्णु
38	बुध के प्रत्यधि देवता	विष्णु
39	बुध ग्रह का कद	मध्यम (सामान्य)
40	बुध ग्रह शुष्क्ाादि में	जलीय ग्रह

बुध ग्रह के कारकत्व

बुध ग्रह के कारकत्व अर्थात वे विशेष कारण या विषय वस्तुएं आदि जिनसे हम उस समय पूरी तरह प्रभावित होते हैं, जिस समय हम बुध ग्रह की दशा, गोचर, योग और अवस्था आदि में पूरी तरह प्रयत्नशील रहते हैं या उस आयु अवस्था आदि पर पहुंच जाते हैं, बुध ग्रह के वे सभी विशेष प्रभावित करने वाले तत्व निम्न प्रकार से हैंः-

बुद्धिमता, वाणी, विद्वता, सांख्यिकी, पर्यटन, व्यापार, नपुंसकता, त्वचा, पक्षी, व्याकरणशास्त्री, निपुणता, हास्य, ख्याति, दूरसंचार, परिवहन, पुस्तकालय, सभी शिक्षण संस्थाएं, उपासना, इन्टरनेट प्रणाली, मनोरंजन, चयन क्षमता, शिक्षा, गणित, डाकिया या डाक सेवा, तर्क, ज्योतिषी, वाकपटुता, मैडिकल ज्ञान, व्यवसाय, प्रकाशन, नृत्य, नाटक, मामा, मित्र युवावर्ग, दत्तक पुत्र, लेखाकार, शिल्प कार्य, व्यापार संचार, शरद् ऋतु, वकील, हाजिर जवाब, सलाहकार, मार्किटिंग करना, अनिद्रा रोग, मनोवैज्ञानिक रोग आदि।

बुध ग्रह से संबंधित उपचार और दान आदि

बुध ग्रह को शांत, प्रसन्न और बलशाली बनाकर, बुध ग्रह के अशुभ प्रभावों को कम या न के बराबर करने और शुभ प्रभावों को बढ़ाकर और शीघ्र प्राप्त करने के लिए बुध ग्रह के लिये निम्नलिखित सरल, प्रभावशाली और पर्यावरणहितैषी उपचार और दान आदि का अपनी क्षमता और सामर्थ्यानुसार प्रयोग में लाऐं जैसे प्रत्येक माह के किसी शुभ मुहूर्त पर तुलसी, इलायची, हरी सब्जियों के पौधे या कोई फलदार पौधा लगाएं। बुधवार के दिन व्रत रखें। पक्षियों को पालें या उनकी सेवा करें। अपने मित्रों और हम उम्र व्यक्तियों की मदद करें और उन्हें प्रसन्न रखें। बुध ग्रह की वैदिक रीति से पूजा करें या करवाएं, तुलसी को जल व दीप दान करना, श्री विष्णु सहस्त्रनामस्तोत्र का पाठ करना, पन्ना रत्न धारण करें, बुधवार या अमावस्या को व्रत रखें, इलायची बांटें, सप्त अक्षरी बीजक मंत्र का जप करें या वैदिक मंत्र का जप करवाएं, हरी वस्तुओं का दान बुधवार के दिन करना चाहिए जैसे हरी मूंग, हरा वस्त्र, हरी सब्जियां, इलायची, कांसे के बर्तन, मिठाई, फल और घी आदि। यदि सम्भव हो सके तो तुलसी पत्र जल, गोरोचन, शहद, जायफल और नागकेशर आदि के जल से स्नान भी करना चाहिए।

बुध ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित बुध ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय बुधवार के दिन के समय से आरम्भ करना चाहिये। बुध ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, उत्तर दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो घी का दीपक जलाकर प्रतिदिन या बुधवार और रविवार को अवश्य करना चाहिये। बुध ग्रह के मंत्र जप के पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए बुध ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी अपामार्ग (चिचिड़ा) या आम की समिधा से करना चाहिये।

वैदिक मंत्र

ऊँ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ग्वं सृजेथामयं च।

अस्मिन्त्सधस्थेऽध्युत्तर स्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्य सीदत।।

पौराणिक मंत्र

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।

सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

ध्यान मंत्र

पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः।

खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः।।

बुध गायत्री मंत्र

ऊँ चन्द्रपुत्राय विद्महे

रोहिणी प्रियाय धीमहि।

तन्नोः बुधः प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।

ऊँ स्त्रीं स्त्रीं बुधाय नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ बुं बुधाय नमः।

श्री गोविन्द शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं एक या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से दिन के समय करना चाहिये।

बुध ग्रह का रत्न

पन्ना (Emerald) बुध ग्रह का रत्न है, और बुध ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। शुद्ध पन्ना रत्न धारण करने के परिणाम तीन वर्ष तक प्राप्त होते हैं। शुद्ध पन्ना रत्न के अभाव में बुध ग्रह के उपरत्नों का भी प्रयोग किया जा सकता है जैसेः- पन्नी, संगपन्ना, मरगज, ओनेक्स, फिरोजा आदि।

पन्ना रत्न की सामान्य पहचान

पन्ना रत्न देखने में चमकदार, हरा और लगभग पारदर्शी होता है। हाथ में लेने पर अपेक्षाकृत हल्का, कोमल और चिकना होता है। पन्ना रत्न के ऊपर पानी की बूंद रखने पर यथा स्थान बनी रहती है।

पन्ना रत्न की सामान्य परीक्षण विधियां

पन्ना रत्न को जल युक्त कांच के गिलास में रखने पर हरी किरणें निकलती दिखाई देती हैं, असली पन्ना रत्न गरम करने पर चटकता नही है, और उसका रंग भी नही उड़ता।

पन्ना रत्न धारण करने की विधि

पन्ना रत्न को प्लेटिनम, सोने, चांदी या तांबे की अंगूठी या लॉकेट में बनाकर, उसकी प्राणप्रतिष्ठा करके या करवाकर, किसी शुभ मुहूर्त में या शुक्ल पक्ष के बुधवार के दिन या बुध की होरा में या बुध ग्रह के नक्षत्र वाले दिन में सुबह कनिष्ठिा अंगुली (little finger) में धारण करना चाहिये।

पन्ना रत्न धारण करने के लाभ

जन्म पत्रिका में बुध ग्रह के स्वामित्व भाव, बुध ग्रह के स्थित भाव, बुध ग्रह की दृष्टि और बुध ग्रह की दशा आदि में बुध ग्रह के शुभ प्रभावों को बढ़ानें और अशुभ प्रभावों को कम करने में पन्ना रत्न सहायक होता है, साथ ही बुद्धि की तीव्रता और एकाग्रता बढ़ाने, वाणी शक्ति को बढ़ाने, व्यापार में वृद्धि, आंतों से संबंधित रोगों से मुक्ति, मानसिक और श्वास रोगों या तनाव आदि को दूर करने में भी सहायक सिद्ध होता है।

पन्ना रत्न धारण करने के लिए निर्देश और सावधानियां

पन्ना रत्न के पूर्ण शुभ फल प्राप्त करने के लिए अंगूठी या लॉकेट का निचला भाग भी खुला होना चाहिए ताकि पन्ना रत्न आपके शरीर को छू सके। पन्ना रत्न धारण करने के बाद यदि संभव हो सके तो तामसिक भोजन का प्रयोग न करें, नही तो कम से कम बुधवार के दिन तामसिक भोजन का प्रयोग बिलकुल न करें, धैर्य रखें, क्रोध न करें, झूठ न बोलें और बुधवार के दिन यथा शक्ति बुध ग्रह का मंत्र जप करें। **पन्ना रत्न धारण करनें के बाद 27 दिन के अन्दर यदि आपको प्रतिकूलता का अनुभव हो तो तुरंत ज्योतिषीय सलाह लें।**

बृहस्पति ग्रह की पौराणिक कथा

पुराणों के अनुसार बृहस्पति के जन्म को लेकर अनेकों कथाएं हैं, ऋषि अंगिरा के पुत्र का नाम था अथर्वन। आगे चलकर अथर्वन के पुत्र हुए उशिज और उशिज के तीन पुत्र हुए उचथ्य, बृहस्पति और संवर्त। एक अन्य कथा के अनुसार ऋषि अंगिरा की पत्नी ने विवेकशील, तपस्वी और ज्ञानी पुत्र की प्राप्ति के लिए सनतकुमारों द्वारा बताये व्रतों का विधि विधान और पूर्ण श्रद्धा के साथ सभी व्रतों का पालन किया, जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम बृहस्पति रखा गया। बृहस्पति शास्त्रों में पारंगत, विवेकशील, तपस्वी और कुशाग्र बुद्धि वाले थे। बृहस्पति ने प्रभास तीर्थ में जाकर भगवान भोले शंकर की कठोर तपस्या की, बृहस्पति की इस कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान भोले शंकर प्रकट हुए और उन्होंने बृहस्पति को अनेकों आशीर्वाद दिये, साथ ही देवताओं का गुरू बनने का भी वरदान दिया। पुराणों में मिलता है कि बृहस्पति की तीन पत्नियां थी पहली पत्नी का नाम था शुभा, जिनसे उन्हें सात कन्याएं प्राप्त हुई, दूसरी पत्नी का नाम था तारा जिनसे उन्हें सात पुत्र और एक कन्या रत्न की प्राप्ति हुई, तीसरी पत्नी का नाम था ममता जिनसे उन्हें दो पुत्र क्रमशः भारद्वाज जो सप्त ऋषियों में से एक हुए और दूसरे पुत्र का नाम था कच। भगवान शंकर के आशीर्वाद से बृहस्पति देवताओं के गुरू नियुक्त हुए, इसलिए इनको गुरू के नाम से भी जाना जाता है। देवासुर संग्राम में बृहस्पति इन्द्र और देवताओं की रक्षा करने की यथा संभव प्रयत्न करते थे और यज्ञ से देवताओं का भाग भी दिलवाते थे, दूसरी ओर शुक्राचार्य वृषपर्वा और दैत्यों की रक्षा करते थे। देवताओं के गुरू बृहस्पति और दैत्यों के गुरू शुक्राचार्य दोनों में एक बड़ा अन्तर यह था कि शुक्राचार्य मृतसंजीवनी विद्या जानते थे, इसलिए युद्ध में मारे गए सभी असुरों और दैत्यों को शुक्राचार्य मृतसंजीवनी विद्या का प्रयोग करके उन्हें पुनः जीवित कर देते थे। इस बात का बृहस्पति को बड़ा क्षोभ था। देवताओं की रक्षा हेतु बृहस्पति ने अपने पुत्र कच को मृतसंजीवनी विद्या सीखने के लिए शुक्राचार्य के पास भेजने का खतरा उठा लिया, पर बृहस्पति यह भी जानते थे कि शुक्राचार्य की केवल एक ही पुत्री है जिसका नाम देवयानी था, यदि वह कच पर आसक्त हो गई तो पुत्री मोह में आकर वह कच को मृतसंजीवनी विद्या अवश्य सिखा देंगे और हुआ भी कुछ ऐसा ही, जब कच शुक्राचार्य के पास पहुंचे तो उन्होंने दैत्य गुरू शुक्राचार्य को अपना पूर्ण परिचय बताया और देवयानी के आग्रह पर शुक्राचार्य ने कच को अपने आश्रम में रख लिया, इस बात का असुरों और दैत्यों ने बहुत विरोध किया पर शुक्राचार्य को रोकने का साहस न कर सके, परन्तु द्वेष से भरे हुए असुरों और दैत्यों ने मिलकर कच की दो बार हत्या कर दी और शुक्राचार्य ने दोनो बार अपनी पुत्री देवयानी के आग्रह पर मृतसंजीवनी विद्या का प्रयोग करके कच को जीवित कर दिया, इस सब के बाद भी तीसरी बार असुरों और दैत्यों ने फिर कच की हत्या कर दी और उसे जलाकर उसकी राख को मदिरा में मिलाकर शुक्राचार्य को ही पिला दिया। एक बार फिर से पुत्री के आग्रह पर जब शुक्राचार्य ने कच को आवाज लगाई तो मालूम हुआ कि कच तो उन्हीं के उदर में ही है, तब शुक्राचार्य ने कच को उदर में ही मृतसंजीवनी विद्या सिखा दी, उसके बाद कच शुक्राचार्य के पेट को फाड़कर बाहर निकल आया और उसी मृतसंजीवनी विद्या का प्रयोग करके शुक्राचार्य को फिर से जीवित कर दिया। कच मृतसंजीवनी विद्या जान चुका था इसलिए उसका शुक्राचार्य के पास आने का संकल्प पूर्ण हो चुका था और वह देवयानी को छोड़कर अपने पिता बृहस्पति के पास वापस चला गया।

बृहस्पति ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

देवताओं का गुरू होकर उनका मार्ग दर्शन करना एक अलग बात है, पर देवताओं के कल्याणार्थ अपने पुत्र को ही शत्रुओं के पास स्वयं भेजना बड़ी बात है, स्पष्ट है कि जन्म पत्रिका में बृहस्पति सदा आपके कल्याणार्थ कार्य करते हैं और सदा आपके ऊपर अपनी कृपा बनाए रखते हैं। बृहस्पति की सभी दशाएं

आपके उद्धार के लिए होती हैं, यदि आप पूर्ण रूप से प्रयत्नशील हैं, तो देवताओं के गुरू का आशीर्वाद आपका कल्याण अवश्य करेगा।

बृहस्पति ग्रह अत्यन्त शुभ माना जाता है, सभी नौ ग्रह आपस में नैसर्गिक मित्र, शत्रु और सम भाव रखतें हैं, पर बृहस्पति से कोई ग्रह शत्रुता नही रखता। यह एक दिन में 5 मिनट से लेकर 15 मिनट तक चलता है। एक राशि में इसको लगभग 13 महीने लग जाते हैं। जन्म कुंडली में बृहस्पति ज्ञान व उत्साह को दर्शाते हैं। बृहस्पति को गुरू के नाम से भी जाना जाता है। गुरू शब्द से स्पष्ट है, कि विद्वान, ज्ञानी, समझदार, दक्ष आदि। सभी देवताओं के गुरू हैं बृहस्पति, यदि आपकी जन्म पत्रिका में बृहस्पति बलशाली है और विंशोत्तरी महादशा आपके अनुकूल है और आप प्रयत्नशील हैं तो आप में भी ये सभी गुण आ सकते हैं। शुभता के आधार पर बृहस्पति प्रथम श्रेणी में गिने जाते हैं। मुहूर्त शास्त्र में भी बृहस्पति यदि अस्त हैं, तो अनेकों शुभ कार्य रोक दिए जाते हैं। इसका कारण है कि गुरू के आशीर्वाद के बिना आपका कल्याण संभव नही है। बृहस्पति सच्चाई, पवित्रता शुभता का प्रतीक है, जीवन में भी हमें आगे बढ़ने के लिए इसी प्रकार के गुण वाले व्यक्तियो की आवश्यकता होती है और हम चाहे कैसे भी हों पर हमे व्यक्ति बृहस्पति के गुण वाले ही मिलें, ठीक इसी प्रकार सभी ग्रहों को बृहस्पति के आशीर्वाद की आवश्यकता होती है। बृहस्पति अमृत की वर्षा करते हैं, इसलिए जहां बैठें या दृष्टि रखें वहां की सकारात्मक उर्जा को बढ़ाते हैं। कुण्डली के केन्द्र में यदि बृहस्पति हों तो कुण्डली के कई दोषो को भी दूर कर देतें हैं।

बृहस्पति ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैं:-

1	कारक	विधा
2	संबंध	संतान
3	स्वभाव	शुभ और सौम्य
4	गोत्र	अंगीरस
5	दिन	बृहस्पतिवार
6	वाहन	हाथी (गज)
7	रंग	पीला
8	दिशा	पूवोत्तर (North-East)
9	गुण (प्रकृति)	सतोगुणी
10	लिंग	पुरूष
11	वर्ण (जाति)	ब्राह्मण
12	तत्व	आकाश
13	स्वाद	मीठा
14	धातु	सोना
15	ऋतु	हेमन्त ऋतु
16	दृष्टि विशेष	5,7,9 (पूर्ण दृष्टि)

17	भोजन	काबुली चना
18	शारीरिक अंग	चर्बी, मस्तिष्क
19	अन्न दान	दाल चना
20	द्रव्य दान	घी
21	विंशोत्तरी महादशा	16 वर्ष
22	जप संख्या	19,000
23	रत्न	पुखराज, (संस्कृत में पुष्पराग)
24	उपरत्न	सुनहला, सोनल, केसरी
25	सहचरी	तारा, शुभा, ममता
26	चरादि	स्थिर
27	समिधा	पीपल
28	बृहस्पति के मित्र ग्रह	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल
29	बृहस्पति के सम ग्रह	शनि, राहु, केतु
30	बृहस्पति के शत्रु ग्रह	बुध, शुक्र
31	उच्च राशि	कर्क (0°से 5° तक)
32	नीच राशि	मकर (0°से 5° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	धनु (0°से 10° तक)
34	स्वग्रही राशि	धनु (11°से 30° तक)
35	राशि स्वामी	धनु, मीन
36	नक्षत्र स्वामी	पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद
37	बृहस्पति के आधी देवता	इन्द्र
38	बृहस्पति के प्रत्यधि देवता	ब्रह्मा
39	बृहस्पति ग्रह का कद	ह्रस्व (छोटा)/मध्यम (सामान्य)
40	बृहस्पति ग्रह शुष्काादि में	जलीय ग्रह

बृहस्पति ग्रह के कारकत्व

बृहस्पति ग्रह के कारकत्व अर्थात वे विशेष कारण या विषय वस्तुएं आदि जिनसे हम उस समय पूरी तरह प्रभावित होते हैं, जिस समय हम बृहस्पति ग्रह की दशा, गोचर, योग और अवस्था आदि में पूरी तरह

प्रयत्नशील रहते हैं या उस आयु अवस्था आदि पर पहुंच जाते हैं, बृहस्पति ग्रह के वे सभी विशेष प्रभावित करने वाले तत्व निम्न प्रकार से हैंः-

बुद्धिमानी, शिक्षण, शरीर की बनावट, शिक्षक, मंत्र, संचितधन या धन, प्रवचनकर्ता, चर्बी, मोटापा, प्रसन्नता, उच्च शिक्षा, सात्विकता, वात रोग, दक्षता, सभी प्रकार की वित्त संस्थाएं, विवेक, धर्म, विकास व सुख समृद्धि, निर्णय शक्ति, धैर्य, श्रद्धा, आस्था, विदेश व्यापार, उद्योग व्यापार, आयात निर्यात, कपड़ा मिल, परस्पर सहयोग, तपस्या, सम्मान, पति सुख, धार्मिक लाभ के कार्य, ईश्वर के प्रति निष्ठा, बड़े भाई या भाईयों से संबंध, बड़ों का कारक, वरिष्ठ व्यक्तियों का कारक, फिलोसफी, पुत्र, परोपकार, धार्मिक प्रचार, मानसिक सुख, हेमन्त ऋतु, आध्यात्म क्षेत्र, दयालुता आदि।

बृहस्पति ग्रह से संबंधित उपचार और दान आदि

बृहस्पति ग्रह को शांत, प्रसन्न और बलशाली बनाकर, बृहस्पति ग्रह के अशुभ प्रभावों को कम या न के बराबर करने और शुभ प्रभावों को बढ़ाकर और शीघ्र प्राप्त करने के लिए बृहस्पति ग्रह के लिये निम्नलिखित सरल, प्रभावशाली और पर्यावरणहितैषी उपचार और दान आदि का अपनी क्षमता और सामर्थ्यानुसार प्रयोग में लाऐं जैसे प्रत्येक माह के किसी शुभ मुहूर्त पर केला, आम, और पपीते आदि के पौधे लगाएं। बृहस्पतिवार या अमावस्या के दिन व्रत रखें। वृद्ध गाय पालें या उसकी सेवा करें। चीटियों को आटा डालें। अपने गुरूजनों और विद्वान व्यक्तियों की सेवा करें और उन्हें प्रसन्न रखें। बृहस्पति ग्रह की वैदिक रीति से पूजा करें या करवाएं। पीला पुखराज धारण करें, वैदिक मंत्र का जप करवाएं या बीज मंत्र का जप स्वयं करें, विष्णु पुराण का पाठ करवाएं या विष्णु सहस्त्र नाम का पाठ करें। पीली वस्तुओं का दान बृहस्पतिवार के दिन करना चाहिए जैसे पीली दाल, पीला वस्त्र, शहद, गुड़, पुस्तकें, कांस्य पात्र, मिठाई, फल, और घृत आदि। यदि सम्भव हो सके तो मधु, हल्दी, दमयंती, गूलर, मुलेठी, और मालती पुष्प आदि के जल से स्नान करना चाहिए।

बृहस्पति ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित बृहस्पति ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय बृहस्पतिवार के दिन संध्या काल से आरम्भ करना चाहिये। बृहस्पति ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, पूर्वोत्तर दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो घी का दीपक जलाकर प्रतिदिन या बृहस्पतिवार और रविवार को अवश्य करना चाहिये। बृहस्पति ग्रह के मंत्र जप के पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए बृहस्पति ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी पीपल या आम की समिधा से करना चाहिये।

वैदिक मंत्र

ऊँ बृहस्पतेऽअतियदर्योऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।

यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

पौराणिक मंत्र

ऊँ देवानां च ऋषीणां च गुरूं कांचनसन्निभम्।

बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

ध्यान मंत्र

देवानां गुरूः तद्वत् पीतवर्णः चतुर्भुजः।

दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्रकमण्डलुः।।

बृहस्पति गायत्री मंत्र

ऊँ आंगिरसाय विद्महे

सुराचार्याय धीमहि।

तन्नोः गुरूः प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरूवे नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ ऐं क्लीं हुं बृहस्पतये नमः।

ऊँ श्रीं श्रीं गुरवे नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ बृं बृहस्पतये नमः।

श्री गिरिधर शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं एक या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से संध्याकाल के समय करना चाहिए।

बृहस्पति ग्रह का रत्न

पुखराज (yellow sapphire) बृहस्पति ग्रह का रत्न है और बृहस्पति ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। शुद्ध पुखराज रत्न धारण करने के परिणाम चार वर्ष तक प्राप्त होते हैं। शुद्ध पुखराज रत्न के अभाव में बृहस्पति ग्रह के उपरत्नों का भी प्रयोग किया जा सकता है जैसेः- सुनहला, सोनल, केसरी आदि।

पुखराज रत्न की साधारण पहचानः-

पुखराज रत्न देखने में चमकीला और पारदर्शी होने के साथ कोई न कोई रेशा (छोटा या बड़ा) अवश्य होता है, और हाथ में लेने पर चिकना और भारीपन वाला होता है, पुखराज रत्न में से सूर्य की किरणें सीधी न आकर वक्री आती हैं।

पुखराज रत्न की सामान्य परीक्षण विधियां

पुखराज रत्न को 24 घण्टे गाय के दूध या गोमूत्र या दोनों के मिश्रण में रखने पर उसकी चमक और रंग में कोई अन्तर नही आता, शुद्ध पुखराज रत्न गरम होने पर नितान्त श्वेत वर्ण का हो जाता है। पुखराज रत्न पर लोहे से भारी चोट मारने पर वह किनारे से या एक ओर से टुकड़े की तरह टूटेगा, चूर-चूर नही होगा।

पुखराज रत्न धारण करने की विधि

पुखराज रत्न को चांदी या सोने की अंगूठी या लॉकेट में बनवाकर, उसकी प्राणप्रतिष्ठा करके या करवाकर, किसी शुभ मुहूर्त में या गुरू पुष्य योग में या शुक्ल पक्ष के बृहस्पतिवार के दिन या गुरू की होरा में या बृहस्पति ग्रह के नक्षत्र वाले दिन में सुबह तर्जनी अंगुली (index finger) में धारण करना चाहिये।

पुखराज रत्न धारण करने के लाभ

जन्मपत्रिका में बृहस्पति ग्रह के स्वामित्व भाव, बृहस्पति ग्रह के स्थित भाव, बृहस्पति ग्रह की दृष्टि और बृहस्पति ग्रह की दशा आदि में बृहस्पति ग्रह के शुभ प्रभावों को बढ़ाने और अशुभ प्रभावों को कम करने में पुखराज रत्न सहायक होता है, साथ ही विवेक वृद्धि, पीलिया रोग, कुष्ठ व चर्मरोग नाशक, स्वास्थ्य एंव आयु वृद्धि, बुद्धि और व्यापार या व्यवसाय वृद्धि, अध्ययन और किसी कन्या के विवाह में भी होने वाले विलंब को दूर करने में भी सहायक सिद्ध होता है।

पुखराज रत्न धारण करने के लिए निर्देश और सावधानियां

पुखराज रत्न के पूर्ण शुभ फल प्राप्त करने के लिए अंगूठी या लॉकेट का निचला भाग भी खुला होना चाहिए ताकि पुखराज रत्न आपके शरीर को छू सके। पुखराज रत्न धारण करने के बाद यदि संभव हो सके तो तामसिक भोजन का प्रयोग न करें, नही तो कम से कम बृहस्पतिवार के दिन तामसिक भोजन का प्रयोग बिलकुल न करें, धैर्य रखें, क्रोध न करें, झूठ न बोलें और बृहस्पतिवार के दिन यथा शक्ति बृहस्पति ग्रह का मंत्र जप करें। **पुखराज रत्न धारण करने के बाद 27 दिन के अन्दर यदि आपको प्रतिकूलता का अनुभव हो तो तुरंत ज्योतिषीय सलाह लें।**

शुक्र ग्रह की पौराणिक कथा

भगवान शंकर के परमभक्त और दैत्यों के गुरू शुक्राचार्य को शुक्र के नाम से भी जाना जाता है। ऋषि भृगु के पुत्र हैं शुक्राचार्य, जिनका नाम पहले एक सिद्ध ऋषि के नाम से जाना जाता था वह था उषान्। मत्स्यपुराण के अुनसार शुक्राचार्य ने भगवान भोलेनाथ के लिंग की स्थापना करके घनघोर तपस्या की जिससे भगवान भोलेनाथ प्रसन्न होकर उनके सामने प्रकट हो गये और शुक्राचार्य को अनेकों औषधियों, मंत्रों, रसों, समस्त सम्पतियों आदि का स्वामी बनाने के साथ उन्हें मृतसंजीवनी विद्या का भी ज्ञान दे दिया। असुरों के कल्याण के लिए ऐसी तपस्या आज तक किसी ने नही की थी, दैत्यों के कल्याणार्थ प्रयत्न में उन्होंने अपनी एक आंख भी गंवा दी थी इसलिए इन्हें दैत्यों का गुरू पद प्राप्त हुआ। शुक्राचार्य ने अपनी समस्त सम्पत्ति भी दैत्यों को दे दी और स्वयं तपस्वी जीवन स्वीकार कर लिया। दैत्यों का एक राजा अन्धक, उसने देवताओं पर चढ़ाई कर उन पर बहुत अत्याचार किया और उन्हें बहुत सताने लगा, इस युद्ध में जो भी दैत्य या असुर आदि मारे जाते उन्हें शुक्राचार्य जी मृतसंजीवनी के प्रयोग से फिर से जीवित कर देते थे, इस प्रकार अन्धकासुर का देवताओं से हारना लगभग असंभव था, इसलिए सभी देवता दुःखी होकर भगवान शंकर के

पास गये और अपनी व्यथा सुनाई। भगवान शंकर ने शुक्राचार्य को अपने पास बुलवाया और उसे जीवित ही निगल गए। अन्धकासुर की शक्तिशाली दैत्यों की सेना को पुनः जीवनदान देने वाला अब कोई नही था। धीरे-धीरे अन्धकासुर कमजोर पड़ गया और उसे पराजय का मुख देखना पड़ा। इधर शुक्राचार्य ने भगवान शंकर के उदर में ही उनकी आराधना करना आरम्भ कर दिया और भगवान शंकर के वीर्य के साथ शुक्राचार्य भी भगवान शंकर के उदर से बाहर आ गए, इस तरह शुक्राचार्य के प्रकट होने पर भगवान शिव और माता पार्वती ने उन्हें पुत्र रूप में स्वीकार कर लिया, साथ ही उन्हें अमर होने का वरदान भी दे दिया।

शुक्र ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

कठिन तप से प्राप्त अपनी सम्पत्ति असुरों को देना, पुत्री मोह में आकर अपने अमूल्य ज्ञान को भी दे देना इस बात का प्रमाण है कि शुक्र आपको सम्पन्नता, कला और अमूल्य ज्ञान दे सकता है यदि आप उसके लिए पूर्ण रूप से प्रयत्नशील हैं। भगवान शंकर के वीर्य के साथ प्रकट होने के कारण शुक्र ग्रह को जातक के वीर्य का प्रबल कारक ग्रह भी माना जाता है।

शुक्र शुभ ग्रहों में गिना जाता है। यह एक दिन में लगभग 61 मिनट से लेकर 83 मिनट तक चलता है। एक राशि में लगभग 25 से 27 दिनों तक का रहता है। शुक्र कुण्डली में पुरूषार्थ (वीर्य) के बारे में बताता है। शुक्राचार्य को दैत्यों का गुरू भी कहा गया है, जो अपने कठिन तप, परिश्रम आदि से संसार में सभी प्रकार के आनन्द, ऐश्वर्य, सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने में सफल होते हैं। आपकी कुण्डली में शुक्र बलशाली हो, शुभ स्थान पर हो, शुभ ग्रहों और बलशाली ग्रहों के संपर्क में हो तो आपको भी जीवन में समय-समय पर ऐश्वर्य और सुख-सुविधाओं की कमी नही रहेगी, परन्तु यदि शुक्र नीच, अस्त, वक्री या बलहीन हुआ तो बहुत अधिक प्रयत्न के बाद भी सुख-सुविधाओं का अभाव ही रहेगा।

शुक्र ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैंः-

1	कारक	काम
2	संबंध	स्त्री (पत्नी)
3	स्वभाव	शुभ और सौम्य
4	गोत्र	भार्गव
5	दिन	शुक्रवार
6	वाहन	सफेद घोड़ा
7	रंग	स्वेत
8	दिशा	दक्षिण-पूर्व (South-East)
9	गुण (प्रकृति)	रजोगुणी
10	लिंग	स्त्री
11	वर्ण (जाति)	ब्राह्मण/वैश्य
12	तत्व	जल
13	स्वाद	खट्टा

14	धातु	चांदी
15	ऋतु	वसन्त
16	दृष्टि विशेष	7 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	राजमा
18	शारीरिक अंग	वीर्य
19	अन्न दान	चावल
20	द्रव्य दान	दूध
21	विंशोत्तरी महादशा	20 वर्ष
22	जप संख्या	16,000
23	रत्न	हीरा, (संस्कृत में हीरक)
24	उपरत्न	तंकु हीरा, कसला, सिम्मा, ओपल
25	सहचरी	सुकिर्थी और उर्जस्वथी
26	चरादि	चर
27	समिधा	गूलर
28	शुक्र के मित्र ग्रह	बुध, शनि, राहु, केतु
29	शुक्र के सम ग्रह	मंगल, बृहस्पति
30	शुक्र के शत्रु ग्रह	चन्द्रमा, सूर्य
31	उच्च राशि	मीन (0° से 27° तक)
32	नीच राशि	कन्या (0° से 27° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	तुला (0° से 15° तक)
34	स्वग्रही राशि	तुला (16° से 30° तक)
35	राशि स्वामी	वृष, तुला
36	नक्षत्र स्वामी	भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
37	शुक्र के आधी देवता	इन्द्राणी (शची)
38	शुक्र के प्रत्यधि देवता	इन्द्र
39	शुक्र ग्रह का कद	ह्रस्व (छोटा)
40	शुक्र ग्रह शुष्कاादि में	जलीय ग्रह

शुक्र ग्रह के कारकत्व

शुक्र ग्रह के कारकत्व अर्थात वे विशेष कारण या विषय वस्तुएं आदि जिनसे हम उस समय पूरी तरह प्रभावित होते हैं, जिस समय हम शुक्र ग्रह की दशा, गोचर, योग और अवस्था आदि में पूरी तरह प्रयत्नशील रहते हैं या उस आयु अवस्था आदि पर पहुंच जाते हैं, शुक्र ग्रह के वे सभी विशेष प्रभावित करने वाले तत्व निम्न प्रकार से हैंः-

पत्नी या पति सुख, शुक्राणु, विवाह, सैक्स संबंधी, प्रजनन् अंग, सफेदी, संगीत, काव्य, पोशाक, आय, यौवन, वीर्य, व्यापारी, क्रय-विक्रय, नृत्य, सेवक, गीत, संगीत, सुख, वैभव, मनोरंजन, सत्यवादिता, कला कौशल, हास्य विनोद, प्रिय, मंचसज्जा, विद्या, समृध्दि व संपन्नता, वैभव सामग्री, मौडलिंग, सरकारी विकास योजनाएं, सजावटी सामान, ब्यूटी पार्लर, फोटो विडियोग्राफी, सुगन्ध, आभूषण, हीरे-जवाहरात, ऐश्वर्य की सभी वस्तुएं, फूल, फलदार वृक्ष, सभी कलाएं, गौ का पालन पोषण, जलीय स्थान, वाहन सुख, फैशनजगत, सिनेमाजगत, काम, वसन्त ऋतु, प्रेमी या प्रेमिका, फिल्मीजगत, सुन्दरता, कपड़ों का काम, कपड़ों पर कलाकारी या व्यापार, सौन्दर्य, ऐश्वर्य-आनन्द, फैशन आदि।

शुक्र ग्रह से संबंधित उपचार और दान आदि

शुक्र ग्रह को शांत, प्रसन्न और बलशाली बनाकर, शुक्र ग्रह के अशुभ प्रभावों को कम या न के बराबर करने और शुभ प्रभावों को बढ़ाकर और शीघ्र प्राप्त करने के लिए शुक्र ग्रह के लिये निम्नलिखित सरल, प्रभावशाली और पर्यावरणहितैषी उपचार और दान आदि का अपनी क्षमता और सामर्थ्यानुसार प्रयोग में लाऐं जैसेः- प्रत्येक माह के किसी शुभ मुहूर्त पर तुलसी, सफेद फूलदार पौधे या फलदार पौधे लगाएं। शुक्रवार के दिन व्रत रखें। सफेद रंग की गाय पालें या उसकी सेवा करें। जरूरत मंद कन्याओं की सेवा और मदद करें। शुक्र ग्रह की वैदिक रीति से पूजा करें या करवाएं। हीरा धारण करें, शुक्र के वैदिक मंत्र का यथा-शक्ति जप करें या करवाएं या सप्त अक्षरी बीजक मंत्र का स्वंय ही जप करें, देवी दुर्गा जी की पूजा करें। भगवान शिव की पूजा करें, शिव पुराण का पाठ करवाएं, सफेद वस्तुओं का दान शुक्रवार के दिन करना चाहिए जैसे चावल, सफेद वस्त्र, सफेद चन्दन, दूध, दही, चीनी, मिठाई, फल और घृत आदि। यदि सम्भव हो सके तो इलायची युक्त जल, श्वेत चन्दन, जायफल, केशर जल और मनशिला (मैनसिल) आदि के जल से स्नान भी करना चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित शुक्र ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय शुक्रवार के दिन सूर्योदयकाल से आरम्भ करना चाहिये। शुक्र ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, दक्षिण पूर्व दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो घी का दीपक जलाकर प्रतिदिन या शुक्रवार और बुधवार को अवश्य करना चाहिये। शुक्र ग्रह के मंत्र जप के पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए शुक्र ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी गूलर या आम की समिधा से करना चाहिए।

वैदिक मंत्र

ऊँ अन्नात्परिस्त्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः।

ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ग्वं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽमृतम्मधु।।

पौराणिक मंत्र

ऊँ हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

ध्यान मंत्र

दैत्यानां गुरूः तद्वत् श्वेतवर्णः चतुर्भुजः।

दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्र कमण्डलुः।।

शुक्र ग्रह का गायत्री मंत्र

ऊँ भृगुसुताय विद्महे

असुराचार्याय धीमहि।

तन्नोः शुक्रः प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

ऊँ श्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ शुं शुक्राय नमः।

श्री यदुनाथ शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं एक या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से सूर्योदयकाल के समय करना चाहिये।

शुक्र ग्रह का रत्न

हीरा (diamond) शुक्र ग्रह का रत्न है, और शुक्र ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। शुद्ध हीरा रत्न धारण करने के परिणाम सात वर्ष तक प्राप्त होते हैं। शुद्ध हीरा रत्न के अभाव में शुक्र ग्रह के उपरत्नों का भी प्रयोग किया जा सकता है जैसेः- तंकुहीरा, कैंसला, सिम्मा, ओपल, स्फटिक आदि।

हीरा रत्न की सामान्य पहचान

हीरा रत्न देखने में अत्यंत चमकदार और पारदर्शी होता है। हाथ में लेने पर कठोर, ठंडा, चिकना और वजनदार होता है। सर्वाधिक कठोर होने के बावजूद हाथ से नीचे गिरकर टूट सकता है।

हीरा रत्न की सामान्य परीक्षण विधियां

हीरा रत्न अंधेरे में भी चमकता है, धूप में रखने पर इन्द्रधनुष की तरह किरणे निकलती दिखाई देती हैं। अत्यधिक गर्म करने पर अपना रंग कुछ बदल लेता है, पर ठंडा होने पर उसका रंग पुनः पूर्ववत् हो जाता है। हीरा रत्न पर पिघला घी डालते ही हीरा रत्न पर घी जम जाता है या गरम दूध को ठण्डा कर देता है।

हीरा रत्न धारण करने की विधि

हीरा रत्न प्लेटिनम या चांदी की अंगूठी या लॉकेट में बनवाकर, उसकी प्राणप्रतिष्ठा करके या करवाकर, किसी शुभ मुहूर्त में या शुक्ल पक्ष के शुक्रवार के दिन या शुक्र की होरा में या शुक्र के नक्षत्र के दिन सुबह कनिष्ठिा अंगुली (little finger) में धारण करना चाहिये।

हीरा रत्न धारण करने के लाभ

जन्मपत्रिका में शुक्र ग्रह के स्वामित्व भाव, शुक्रग्रह के स्थित भाव, शुक्र ग्रह की दृष्टि और शुक्र ग्रह की दशा आदि में शुक्र ग्रह के शुभ प्रभावों को बढ़ाने और अशुभ प्रभावों को कम करने में हीरा रत्न सहायक होता है, साथ ही वैवाहिक सुख, वाहन सुख में वृद्धि और सम्पन्नता, वैभव, ऐश-आराम में भी वृद्धि करने में सहायक सिद्ध होता है। यौन रोगों से बचाव या यौन रोग से शीघ्र छुटकारा पाने के लिए भी हीरा रत्न धारण किया जाता है।

हीरा रत्न धारण करने के लिए निर्देश और सावधानियां

हीरा रत्न के पूर्ण शुभ फल प्राप्त करने के लिए अंगूठी या लॉकेट का निचला भाग भी खुला होना चाहिए ताकि हीरा रत्न आपके शरीर को छू सके। हीरा रत्न धारण करने के बाद यदि संभव हो सके तो तामसिक भोजन का प्रयोग न करें, नही तो कम से कम शुक्रवार के दिन तामसिक भोजन का प्रयोग बिलकुल न करें, धैर्य रखें, क्रोध न करें, झूठ न बोलें और शुक्रवार के दिन यथा-शक्ति शुक्र ग्रह का मंत्र जप करें। **हीरा रत्न धारण करने के बाद 27 दिन के अन्दर यदि आपको प्रतिकूलता का अनुभव हो तो तुरंत ज्योतिषीय सलाह लें।**

शनि ग्रह की पौराणिक कथा

शनिदेव का जन्म ज्येष्ठ माह की अमावस्या को हुआ था। इनके पिता सूर्य और माता का नाम छाया (संवर्णा) है। पौराणिक ग्रन्थों में शनिदेव के जीवन में प्रकाश डालने वाली अनेकों कथाएं मिलती है, जैसे ब्रह्मपुराण के अनुसार शनिदेव का बालपन से ही भगवान श्री कृष्ण के प्रति बहुत अधिक अनुराग था, इसलिए शनिदेव भगवान श्री कृष्ण के परमभक्त भी हुए। एक कहावत है कि **"मिट्टी के कच्चे घड़े में जो निशान बन जाए, वे अन्त समय तक रहते हैं,"** युवावस्था जो व्यक्ति को काम की ओर खींचती है, उस अवस्था में आकर भी शनिदेव श्री कृष्ण की भक्ति में मगन रहा करते थे। शनिदेव के वयस्क होने पर उनका विवाह संस्कार चित्ररथ की कन्या से हुआ, उनकी पत्नी ईश्वर के प्रति निष्ठावान और बहुत तेजस्विनी थी। एक बार पुत्र प्राप्ति की कामना से वह ऋतु स्नान के बाद श्रृंगार आदि करके रात्रि के समय शनिदेव के पास गयी, पर शनिदेव उस समय श्री कृष्ण के ध्यान में इस तरह मगन थे कि पत्नी के लाख प्रयत्न करने पर भी शनिदेव ने पत्नी की ओर नही देखा, तो काम के आवेग में आकर शनिदेव को उनकी पत्नी ने शाप दे दिया, कि आज के बाद उनकी पूर्ण दृष्टि संकट, कष्ट और विच्छेद का कारण बनेगी। जब शनिदेव का ध्यान टूटा और उन्होंने अपनी पत्नी को मनाया तो पत्नी को भी अपनी भूल पर बहुत पश्चाताप हुआ, पर होनी को कौन टाल सकता है। उसी समय से शनिदेव की दृष्टि को कष्ट का कारक माना गया है, तभी से शनिदेव अपनी

दृष्टि नीचे करके रखते हैं। शनिदेव की इसी शापग्रस्त दृष्टि का प्रभाव एक अन्य पौराणिक कथा में भी नजर आता है। कल्पान्तर में जब भगवान श्री कृष्ण ने श्री गणेश के रूप में भगवान शिव और माता पार्वती के यहां अवतार लिया, तो पूरा कैलाश पर्वत क्षेत्र आनन्दमय वातावरण और उत्साह से भर गया। सभी देवी और देवता आशीर्वाद देनें और मंगलकामना के लिए कैलाश पर्वत पहुचें, जिसमें शनिदेव भी शामिल थे। शनिदेव को अपनी पत्नी का शाप याद था, इसलिए उन्होंने नवजात शिशु को बिना देखे ही आशीर्वाद दे दिया। शनिदेव का इस प्रकार आशीर्वाद देना माता पार्वती को ठीक न लगा, उन्होंने इस प्रकार के आचरण का कारण पूछा, तब शनिदेव ने सारी बात बताकर अपनी विवशता बताई, जिसे सुनकर माता पार्वती ने कहा, कोई भी शाप मेरे बालक का अहित नही कर सकता और शनिदेव को नवजात शिशु पर पूर्ण दृष्टि गोचर करके आशीर्वाद देने का आदेश दिया। पार्वती माता के आदेशानुसार शनिदेव ने जैसे ही नवजात शिशु पर दृष्टि डाली उसी समय नवजात शिशु का सिर धड़ से अलग हो गया। सिर रहित पुत्र को देखकर माता पार्वती मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ी और पूरे कैलाश पर शोक की लहर दौड़ पड़ी। आगे कथा मिलती है कि भगवान विष्णु ने हाथी का सिर लगाकर बालक को फिर से जीवित कर दिया, तभी से नवजात शिशु का एक नाम गजानन (गज माने हाथी आनन माने मुख) पड़ गया, जिसे माता पार्वती ने स्वीकार कर लिया, पर क्रोध के आवेग में आकर शनिदेव को शाप दे दिया। वहां उपस्थित सभी देवी देवताओं ने माता पार्वती को शनिदेव के विवश होने की बात याद दिलाई, जिसे माता पार्वती पहले ही जानती थी और माता पार्वती को याद आया कि शनिदेव ने तो केवल उनकी ही आज्ञा का पालन किया था, इसलिए शाप को केवल एक टांग तक सीमित कर दिया और शनिदेव को अनेकों आशीर्वाद दिये। माता पार्वती के इसी शाप के कारण ही शनि देव लंगड़ाकर चलते हैं।

शनि ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

शनि ग्रह की शापित दृष्टि जन्म पत्रिका के जिन भावों पर पड़ती है वहां विच्छेद, कष्ट और विघ्न की संभावना अधिक बढ़ जाती है साथ ही माता पार्वती के शाप के कारण लंगड़ाकर धीरे चलने से शनिदेव जन्म पत्रिका के जिस भाव में बैठे हों या दृष्टि गोचर करें उस भाव से संबंधित कार्यों में विलंब भी होता है। एक अन्य कथा के अनुसार शनिदेव की माता छाया भगवान भोलेनाथ की परम भक्ता थी, जब शनिदेव गर्भ में थे उस समय छाया को भगवान भोलेनाथ की पूजा और आराधना के कारण कई दिनों तक अपने खाने पीने की भी सुध नही रहती थी, जिसके कारण शनिदेव श्याम वर्ण के हो गये और जन्म के बाद सूर्य देव ने कहा तुम मेरे पुत्र नही हो और माता के छल के कारण शनिदेव को शाप भी दे दिया, कि तुम क्रूर दृष्टि और मन्दगति से चलने वाले हो जाओ, इसी कारण शनिदेव सूर्य ग्रह से और सूर्य शनिदेव से शत्रुता रखते हैं।

शनि अशुभ ग्रहों में गिना जाता है। यह पूरे 24 घंटों में केवल 2 मिनट (angle वाले मिनट) चलता है, सभी नौ ग्रहों में सबसे धीरे चलता है। इसलिए यह विलम्ब का कारक ग्रह है, किसी भी कार्य में होनें वाले विलम्ब को दर्शाता है। एक राशि में लगभग 2½ वर्ष तक रहता है। कुण्डली में शनि शोक, दुःख, परेशानी और विलम्ब आदि को दर्शाता है। शनि ग्रह को शनि देव के नाम से भी संबोधित किया जाता है। परमपिता परमात्मा ने शनिदेव को तीनों लोकों का न्यायाधीश नियुक्त किया है, इसलिए आपके साथ न्याय यही ग्रह करेगा और उसी के अनुसार फल भी देगा। क्या फल, किस प्रकार का फल, क्या फैसला शनि देव आपको आपके कर्मों के अनुसार देगें इसका भय हमेशा बना रहता है। न्याय प्रिय होने के साथ ही शनिदेव अधिक परिश्रमी भी हैं, शनि सभी ग्रहों में सबसे धीरे चलने वाले ग्रह हैं, शनि को बारह राशियों की एक परिक्रमा करने में लगभग 30 वर्षों का समय लगता है, जबकि चन्द्रमा को लगभग 27 दिन लगते हैं, शनि एक राशि में लगभग ढ़ाई वर्ष तक रहते हैं, इसी कारण शनि की साढ़े साती और ढ़ैया (ढ़ाई वर्ष) लम्बे समय तक जातक को प्रभावित करती है। साढ़े साती और ढ़ैया दोनों की ही गणना चन्द्रमा से की जाती है। चन्द्रमा को